1

515

दृष्टि The Vision

drishti

Drishti Mentorship Programme (Mains)-2024

Essay

Name of Candidate:	Prem Singh	Subject/Code:	Essay
UPSC Roll No:	1132556	Date:	14/09/2024
Drishti Id:		E-mail Id:	
Centre:	M.N. 515	Medium:	hindi

Test Code: Essay-09

Time allowed: Three Hours

Maximum Marks: 250

(To be filled by Evaluator only)		
	Max. Marks	Marks Obtained
	(Essay Topic No.)	(Marks)
Section-A		
Section-B		
Total		
Overall Feedback		

INSTRUCTIONS

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पहले निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबन्ध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।
- प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

- The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
- Word limit, as specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

For Student Only				
Time Taken	Start Time:	End Time:	Student Signature	
Mode of Examination	Online	Offline		

For Office Use Only				
Evaluators Code	Evaluator Sign	Evaluation Date	Reviewers Code	Reviewers Sign

Feedback				
Sr. No	**मापदण्ड/Parameters**	**Max. Marks**	**Section-A (Essay-1)**	**Section-B (Essay-2)**
1.	**परिचय:** विषय और संलग्रता की स्पष्टता। **Introduction:** Clarity of theme and engagement.	10		
2.	**विषय वस्तु:** प्रासंगिकता, विश्लेषण की गहराई और उदाहरणों/साक्ष्यों का उपयोग। **Content:** Relevance, depth of analysis, and use of examples/evidence.	25		
3.	**संरचना और संगठन:** तार्किक प्रवाह, पैराग्राफ संरेखण और विचारों की सुसंगतता। **Structure and Organization:** Logical flow, Paragraph alignment and Coherence of ideas.	20		
4.	**प्रासंगिकता:** विषय से विचलन की अनुपस्थिति, तर्क और पुष्टि/प्रमाणीकरण के बीच संतुलन **Relevance:** Absence of Deviation from Topic, Balance between argument and substantiation.	20		
5.	**भाषा और अभिव्यक्ति:** स्पष्टता, व्याकरण, वाक्यविन्यास, शब्दावली और अभिव्यक्ति **Language and Expression:** Clarity, Grammar, Syntax, Vocabulary and Articulation	20		
6.	**निष्कर्ष:** तर्कों और निष्कर्ष का प्रभावी सारांश। **Conclusion:** Effective summary of arguments and conclusion.	10		
7.	**मौलिकता और रचनात्मकता:** विचार और रचनात्मक अभिव्यक्ति में नवीनता। **Originality and Creativity:** Innovation in thought and creative expression.	20		
	कुल: Total:	125		

*** UPSC Requirement for Essay Paper:**

Candidates may be required to write essays on multiple topics. They will be expected to keep ***closely to the subject*** *of the essay to* ***arrange their ideas in orderly fashion*** *and to* ***write concisely.*** *Credit will be given for* ***effective and exact expression.***

*** निबंध पेपर के लिए यूपीएससी की अपेक्षा:**

उम्मीदवार को एक विनिर्दिष्ट विषय पर निबंध लिखना होगा। विषयों के विकल्प दिये जायेंगे। उनसे आशा की जाती है कि अपने विचारों को निबंध के ***विषय के निकट*** *रखते हुए* ***क्रमबद्ध*** *करें तथा* ***संक्षेप*** *में लिखें।* ***प्रभावशाली एवं सटीक अभिव्यक्तियों*** *के लिये श्रेय दिया जायेगा।*

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

निम्न खण्ड A व B प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों का हो :

Write two essays, choosing one topic from each of the following Sections A and B, in about 1000-1200 words each:

(125 × 2 = 250)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खंड-A/SECTION-A

Topic: 1. संशयवाद के साथ प्रतिबद्धता को जोड़ने की क्षमता लोकतंत्र के लिए आवश्यक है।"

"निंदक नियरे राखिए,
आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना,
निर्मल करे सुभाय॥"

उपरोक्त पंक्तियाँ जीवन में आलोचना, समीक्षा, आत्म मूल्यांकन, आत्म परिष्कार, बदलाव करके तथा अपनी गलतियों को सुधार करके एक उच्च नैतिक व मूल्य युक्त जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। मानव सभ्यता के विकास क्रम में अगर देखा जाये तो कृषि क्रांति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

से लेकर औद्योगिक क्रांति तक एवं कबीलाई तंत्र से लेकर राजतंत्र व आधुनिक लोक कल्याणकारी लोकतंत्र की स्थापना हो या फिर वैज्ञानिक खोज व आविष्कार हो अथवा व्यक्ति का आत्मिक विश्वास और व्यक्तिगत विकास हो सभी मे जो प्रमुख विकास का उत्प्रेरक रहा है वह है संशय करना व सुधार की प्रतिबद्धता। यह प्रतिबद्धता व संशय तथा जिसने रामबोला को तुलसीदास, सिद्धार्थ को गौतम बुद्ध तथा अंगुलीमाल डाकू को महाकवि वाल्मिकि बनाया है।

जिस तरह संशयवाद व प्रतिबद्धता सुधार तथा विकास हेतु आवश्यक है उसी तरह के संशय व प्रतिबद्धता की क्षमता लोकतंत्र के लिए भी जरूरी है। तभी जाकर एक लोकतंत्र सुचारु रूप से कार्य करता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
drishti
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विचारणीय प्रश्न यह है कि आखिर ये संशय वाद होता क्या है? तथा प्रतिबद्धता से क्या आशय है? और लोकतंत्र के लिए संशयवाद व प्रतिबद्धता को जोड़ना क्यो आवश्यक है? यदि संशयवाद व प्रतिबद्धता नही होगी तो लोकतंत्र पर क्या प्रभाव पड़ेगा। क्या संशय व प्रतिबद्धता ~~[illegible]~~ का जुड़ाव हमेशा लोकतंत्र के लिए ~~[illegible]~~ फायदे मंद होता है और संशय व प्रतिबद्धता को हम कैसे लोकतंत्र में बढ़ा सकते है? इन्ही प्रश्नों पर आगे चिंतन करने की कोशिश की गई है।

संशयवाद का अर्थ है शंका करना, प्रश्न उठाना व आलोचना करना ताकि कमियों पर गौर किया जा सके व आवश्यक सुधार किया जा सके। जिससे व्यक्ति,

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

समाज व देश की रीतियों, परम्पराओं व राजनीतिक सामाजिक मान्यताओं को सुधार कर एक भागीदारी पूर्ण लोकतंत्र बनाया जा सके। ~~ताकि~~ तभी हम उच्च मानव विकास को प्राप्त कर सकेंगे

वहीं दूसरी तरफ प्रतिबद्धता का आशय है उठाये गये सवाल व कमियों मे सुधार के लिए प्रतिबद्ध होना यह सुधार के प्रति दृढ निश्चय व जवाबदेहिता की भावना है। क्योंकि बिना प्रतिबद्धता के संशय व आलोचना का कोई महत्व नही है। यह उसी तरह तरह ~~जब~~ जैसे कोई संगीतकार अपने शिष्य को संगीत शिक्षण के समय निरीक्षण करके सही राय देने के साथ-साथ उसकी गायन शैली में सुधार करने का प्रयास करता है।

अब सवाल उठता है कि लोकतंत्र के लिए संशयवाद व प्रतिबद्धता क्यो आवश्यक है?

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दरअसल लोकतंत्र का मतलब ही है "जनता का जनता द्वारा व जनता के लिए शासन - अब्राहम लिंकन" यदि लोकतंत्र जनता का शासन है तो संशय भी जनता ही करेगी? यह संशय जनता मीडिया, नीतियों की आलोचना, धरने, प्रदर्शन, चुनाव में सत्ताधारी दल को हराकर तथा सरकार से प्रश्न पूछकर करती है।

बिना संशय के लोकतंत्र में अधिनायकतंत्र स्थापित होना शुरू हो जाता है। जैसा की हम देखते है हिटलर, जो अगर तानाशाह बना और विश्व को द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका व यहूदियों के नरसंहार जैसे वीभत्स घटनाओं को अंजाम दिया तो इसका कारण संशयवाद व प्रतिबद्धता की अनुपस्थिति ही था।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

हिटलर की तरह ही मुसोलिनी, किम जोंग उन, औरंग जेब, ~~जितने~~ राबर्ट मुगाबे जितने भी तानाशाह शासक ~~हुए~~ हुये है सभी का कारण प्रतिबद्धता व संशयवाद की अनुपस्थिति रहा है।

संशयवाद व प्रतिबद्धता लोकतंत्र में नागरिकों के मूल अधिकारों तथा नागरिक स्वतंत्रता को मजबूत करते है व इनकी सुरक्षा करते है। जिससे कल्याण कारी राज्य व सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की स्थापना होती है।

चाहे पश्चिम का सिमोन द बोउवा का नारीवादी आंदोलन हो अथवा मार्टिन लूथर किंग का रंगभेद की समाप्ति हेतु नागरिक स्वतंत्रता आन्दोलन या फिर भारत में जे.पी आंदोलन अथवा हाल का बंग्लादेश का छात्र आंदोलन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision | d

इनका मूल उद्देश्य था सरकार पर सवाल उठाकर ~~तथा~~ व एक प्रतिबद्ध सरकार की स्थापना ताकि नागरिक अधिकारों की रक्षा करके लोकतंत्र को मजबूत किया जा सके।

ध्यातव्य है कि बिना संशय व प्रतिबद्धता के लोकतंत्र भीड़तंत्र व भ्रष्टाचार का अड्डा बन जाता है जिससे आर्थिक असमानता, गरीबी, शोषण, असमानता, पर्यावरण क्षरण, राजनीति का अपराधीकरण, हिंसा जैसी बुराईयाँ स्थापित हो जाती है जिससे चारो तरफ त्राहि-त्राहि का भाव व संवैधानिक तंत्र की समाप्ति होने लगती। वहीं दूसरी तरफ यदि संशयवाद व प्रतिबद्धता को जोड़ दिया जाये तो "तुलसी के राम राज्य की स्थापना हो सकेगी

"दैहिक दैविक भौतिक तापा,
राम राज काहु नहीं व्यापा।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यह एक समावेशी शासन प्रणाली होगी जिसमे असमानता, अन्याय, हिंसा, घृणा जैसे तत्व अनुपस्थित होंगे।

"नही दरिद्र कोउ, दुख नही दीना"

संशयवाद व प्रतिबद्धता लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की आजादी व संवाद शैली को स्थापित करते है। जिससे लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ आम आदमी की आवाज बनकर उत्तरदायी व भागीदारीपूर्ण लोकतंत्र की स्थापना में सहायक होता है जिससे समाज में सहिष्णुता की भावना उत्पन्न होती है। वाल्टेयर का कथन है-

"हो सकता है में तुम्हारे विचारो से सहमत नही हो पाऊ, परन्तु तुम्हारे विचार प्रगट करने के अधिकारो की रक्षा अपने मरते दम तक करूगा।"

सहिष्णुता का यही भाव

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

है जो लोकतंत्र को असहिष्णुता व प्रतिबद्धता जैसे गुणों से मुक्त बनाता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संशयवाद न केवल राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना करता है बल्कि यह समाज की कुरीतियों व आडम्बरों की निंदा करके। उनमें निरन्तर सुधार के लिए प्रतिबद्ध भी रहता है तभी आकर राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द विद्यासागर, विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे सुधारक, जातिवाद, छुआ छूत, लैंगिक असमानता, सती प्रथा, बाल विवाह पर अंकुश लगा सके। कबीर तो सुधार की प्रतिबद्धता व संशय के इतने आग्रहशील थे कि वे निरन्तर सवाल उठते है—

" कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई बनाय
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।"

~~संशयवाद का~~
अगर बात करें जहाँ

Copyright— Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

केवल संशयवाद है और प्रतिबद्धता नहीं है तो क्या हो। ऐसी स्थिति में संशयवाद सिर्फ 'भैंस के आगे बीन बजाना' व 'विषहीन सर्प की तरह हो जाता है' ~~क्योंकि~~ क्योंकि जिस आलोचना द्वारा सुधार की गुंजाइश न हो वह ~~केवल~~ न केवल निरर्थक है बल्कि समय के पश्चात मृत अवस्था में परिवर्तित होकर महत्वहीन हो जाती है।

महत्वहीन आलोचना को हम उत्तर कोरिया के शासन तंत्र में देख सकते हैं जहां मीडिया तंत्र केवल ~~एक~~ सरकार के गुणगान में लगा रहता है। यह न केवल लोकतंत्र को समाप्त करता है बल्कि नागरिक स्वतंत्रता को भी समाप्त करता है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या संशयवाद हमेशा लोकतंत्र को मजबूत करता है? हम देखते हैं कि काफी बार राष्ट्र विरोधी तत्व जिनमें अलगाववादी,

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आतंकवादी व ~~अराजक~~ अराजक तत्व लोकतांत्रिक सरकारो के प्रति संशय उत्पन्न करके सरकार में ~~अविश्वास~~ लोगों के विश्वास को समाप्त करने ~~वाले~~ की कोशिश करते है। जिससे अस्थिरता व घृणा, धार्मिक कट्टरता, दंगों जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण के लिए हम म्यामार का विद्रोह, अलकायदा व ISIS जैसे संगठन व भारत मे खालिस्तानी तत्वों को देख सकते है।

इसी तरह अत्याधिक संशय दो देशों के मध्य सम्बंधो को भी खराब कर सकता है जैसे मीडिया के प्रोपेगेंडा ने द्वितीयक विश्व युद्ध को भड़काने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसमे अन्ध-राष्ट्रवादियों की प्रतिबद्धता ने आग में घी डालने का कार्य किया। यह भावना लोकतंत्र को उल्टा कमजोर ही करती है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

चिंतन का अगला बिन्दु है कि लोकतंत्र में संशयवाद व प्रतिबद्धता को कैसे समग्रत करके स्थापित किया करें ताकि इसका प्रयोग लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना हेतु किया जा सके।

सर्वप्रथम तो हमें लोगों में नागरिक बोध, जागरूकता, मूल अधिकार व मूल कर्तव्यों का ज्ञान, वैज्ञानिक मनोवृत्ति युक्त संधारणीय समाज ~~की स्थापना~~ का निर्माण करना आवश्यक है जिससे लैंगिक-न्याय, समानता, शिक्षित व उत्तरदायी समाज की स्थापना हो सके। जैसा समाज - स्केन्डेनेवियन देशों - फिनलैंड, नॉर्वे, डेनमार्क में है।

सशक्त लोकतंत्र की स्थापना हेतु लोगों में मताधिकार बोध, अभिव्यक्ति की आजादी, तार्किकता के साथ निष्पक्षता व गैर पक्षधारिता पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था व सरकार बनाने हेतु कार्य किया जाना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

समीचीन है जिसे हम संशयवाद व प्रतिबद्धता से प्राप्त कर सकते है।

उदाहरण स्वरूप भारत के नारी शक्ति वंदन विधेयक को देख सकते है जिसके द्वारा सरकार न केवल राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाने के प्रति प्रतिबद्ध है बल्कि लैंगिक असमानता रूपी संशयो का भी निवारण करने का प्रयास किया गया है।

अत: निष्कर्षत: हम कह सकते है कि संशयवाद व प्रतिबद्धता दोनों का समन्वित प्रयोग करके हम कल्याणकारी, भागीदारी पूर्ण लोकतंत्र के साथ-साथ ईमानदारी, सत्यनिष्ठायुक्त, सुचितापूर्ण प्रशासन तथा भ्रष्टाचार मुक्त शासन प्रणाली को प्राप्त कर सकेंगे। जो न केवल समाज, राज्य व देश बल्कि वैश्विक स्तर पर ग्लोबल गवर्नेंस व वसुधैव कुटुम्बकम के आदर्श को स्थापित कर सकेगा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-1

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

खंड-B/SECTION-B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Topic: 6. जब प्रेम रूपी सत्ता, सत्ता के प्रति प्रेम पर विजय प्राप्त कर लेगी, तो दुनिया को शांति का अनुभव होगा।"

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ,
पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का
पढ़े सो पंडित होय॥"

'कबीरदास'

कलिंग युद्ध में ~~हुए भारी~~ अपनी शक्ति, वीरता व कौशल ने सम्राट अशोक के साम्राज्य विस्तार को सुदूर उड़ीसा, जगन्नाथपुरी तक पहुंचा दिया। इससे अशोक का साम्राज्य व सत्ता ~~न~~ न केवल ~~विस्तारित~~ हुए बल्कि सुदृढ़ व मजबूत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

मौर्य साम्राज्य की स्थापना में भी सहायक सिद्ध हुए परन्तु युद्ध के पश्चात् हुई भारी जन हानि व विध्वंस के दृश्य ने अशोक को अंदर से अस्थिर व विकल कर दिया। उसी तरह अकबर के युद्ध पुद्धों के विनाश ने मुगल साम्राज्य का विस्तार तो किया परन्तु इन युद्धों में भीषण संहार भी हुआ जिसने अकबर को सुलह कुल की नीति अपनाने हेतु बाध्य किया। वहीं अशोक ने युद्ध नीति छोड़कर धम्म नीति अपनाई व भेरीघोष द्वारा मानवता की भलाई हेतु मार्ग प्रारम्भ कर दिया।

चाहे कबीर का सिद्धान्तो से निर्गुणीकरण हो या फिर अशोक की धम्म व अहिंसा नीति या फिर अकबर की सुलह कुल व दीन ए इलाही की नीतियां इन सब के अन्दर जो प्रमुख तथ्य है वह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

है - प्रेम रूपी सत्ता का, सत्ता के प्रति प्रेम पर विजय प्राप्त कर लेने की भावना।

अशोक का यह 'मानवता के प्रति प्रेम ही था जो जिसने श्रीलंका तक अपने पुत्र-पुत्री को ~~[illegible]~~ महेन्द्र व संघमित्रा को धम्म व शांति के प्रचार हेतु भेजा।

प्राचीन काल से लेकर ~~[illegible]~~ आज तक भगवान बुद्ध, महावीर, नानकदेव, हजरत रूह, हो या फिर जायसी का 'मानव प्रेम अथेउ बैकुण्ठ' का भाव सभी ने शांति हेतु प्रेम तत्व पर जोर दिया है।

सर्वप्रथम सवाल आता है कि सत्ता ~~के प्रति प्रेम~~ क्या है? तथा प्रेम का मतलब क्या है? सत्ता के प्रति प्रेम क्या है? व प्रेम रूपी सत्ता कैसे

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

'सत्ता' के प्रति प्रेम पर विजय प्राप्त करती है। अगर प्रेम नहीं होगा तो सत्ताप्रेम कैसे दुनियां की शांति के लिए खतरा बन जाता है। इन्हीं पर विचार आगे स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

सत्ता का अर्थ है शक्ति की चाह तथा वैधता द्वारा उच्च स्थान हासिल करना। ताकि उच्च स्तर के निर्णयों द्वारा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक स्तर के शीर्ष स्थान पर पहुँचा जा सके। उदाहरण स्वरूप हम किसी राज्य, देश व समाज का नायक या शासक को देख सकते है जैसे लोकतंत्रों में प्रधान मंत्री व राष्ट्रपति तथा राजतंत्रों में राजाओं की स्थिति

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वही सत्ता के प्रति प्रेम से आशय है साम-दाम-दण्ड भेद किसी भी तरह से उच्चतम स्थान ग्रहण करने की लालसा।

ध्यातव्य है कि सत्ता के प्रति यह प्रेम की लालसा कई बार समाज में अराजकता, युद्ध, शोषण, असमानता, भेदभाव व हिंसा को भी जन्म दे देती है।

प्राचीन काल में चाहे कौरव का सप्तरात्र युद्ध हो या फिर मध्य व आधुनिक काल में औपनिवेशिक युद्ध या फिर दो महायुद्ध इनके मुख्य उद्देश्य शासकों की सत्ता के प्रति लालसा व लालच ही था।

सत्ता के मोह में ही त्रेता युग में कैकेयी ने अपने पुत्र भरत के लिए राज्य का शासन प्राप्त करने हेतु भगवान राम को 14 वर्ष का वनवास दिलाया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

चाहे राम का वनवास हो या फिर अंग्रेजों द्वारा भारत का 400 वर्ष तक शोषण करके लूटने की घटना दोनों में सत्ता का प्रेम केन्द्रीय बिन्दु था।

समाज व परिवार में उत्पन्न अशांति व अन्याय को अगर देखा जाये तो पुरुष सत्ता व अधिकार के प्रति संकेन्द्रण के कारण महिलाओं, दलितों, गरीबों, पिछड़ों पर अत्याचार किये जाते है ताकि सत्ता पर उच्च वर्गों व पुरुषों का अधिकार बना रहे। यही अशांति का कारण है।

मानव का सत्ता प्रेम ही है जिसने संसाधनों के अंधाधुंध शोषण तथा औद्योगिकीकरण की नीति ने उपभोक्तावाद को बढ़ावा और पर्यावरण प्रदूषण वैश्विक तापन, तथा पर्यावरणीय संकटों को पैदा किया है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आज कोरल ब्लीचिंग, जैव विविधता हानि असामान्य मानसून, ग्लेशियरों का पिघलने का मुख्य कारण मानव का सत्ता के प्रति मोह व अधिक से अधिक उपभोग करके समग्र होने की संस्कृति ही है जिसने दुनियाँ की शांति व्यवस्था में खलल उत्पन्न किया है।

सत्ता मोह ही है जिसने शस्त्रीकरण, गुटवाद, तथा युद्धों को उत्पन्न किया। तथा दंगों, रूस-यूक्रेन युद्ध की तबाही ने न केवल शरणार्थी संकट पैदा किया है बल्कि मानवता के सामने भी अस्तित्व का संकट पैदा कर दिया है।

अब प्रश्न आता है कि प्रेम रूपी सत्ता कैसे सत्ता के प्रति विजय प्राप्त करके दुनिया में शांति स्थापित करती है

जब मनुष्य प्रेम में होता है तो उसमें मानवीय गुणों - स्नेह, दया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अहिंसा, करुणा, समानता जैसे गुणों का विकास होता है जिसे तुलसी दास ने =
"परहित सरिस धर्म नहि भाई
परपीड़ा सम नहि अधिमाई।"
कहकर सम्बोधित किया है।

प्रेम रूपी सत्ता सर्वत्र न्याय की स्थापना पर बल देती है जिससे कट्टरता, असमानता, लैंगिक विभेद, नस्लवाद, रंगभेद की समाप्ति होकर एक समावेशी समाज की स्थापना को बल मिलता है जिसे हम संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर व भारत की विदेश नीति के पंचशील सिद्धान्तों मे देख सकते है।

विज्ञान के क्षेत्र मे प्रेम रूपी सत्ता विज्ञान की शक्तियो का प्रयोग मानवता की भलाई, बचाव व सुविधाओं हेतु करने

Copyright – Drishti The Vision Foundation
उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

का प्रयास करती है जिससे परमाणु हथियारों की जगह परमाणु ऊर्जा, कैंसर का निदान तथा जैव प्रौद्योगिकी का प्रयोग खाद्यान्न सुरक्षा व मानव की शारीरिक व्याधियों के इलाज हेतु करके दुनिया में शांति स्थापित करने का प्रयास किया जाता है।

प्रेम रूपी सत्ता पर्यावरण के सतत व आवश्यकता अनुसार विवेकपूर्ण उपयोग पर बल देती है क्योंकि महात्मा गांधी का कथन है कि "प्रकृति के पास सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संसाधन है परन्तु किसी एक के लालच की पूर्ति हेतु नहीं।" यह समावेशी उपयोग शांति की स्थापना का प्रथम कदम ही है।

जब व्यक्ति के जीवन में ~~मानव~~ प्रेम रूपी सत्ता मजबूत रहती है तो व्यक्ति परिवार, समुदाय, समाज में

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – 'Drishti The Vision Foundation'

दृष्टि The Vision | d

परस्पर सम्मान व मानवाधिकारों का ख्याल रखता है जिससे स्त्री-पुरुष समानता, जातिवाद, साम्प्रदायिकता जैसे भेदभाव व अत्याचार पूर्ण प्रथाएं व परम्पराएं समाप्त होती है।

प्रेम रूपी सत्ता व्यक्ति के स्वयं के आत्मिक विकास को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। क्योंकि आत्मिक विकास के अवरुद्ध होने के कारण ही R.G. अस्पताल के जैसी बलात्कार व हत्या जैसी घृणित घटनाएं घटित होती है अतः प्रेम व्यक्ति की कुण्ठाओं को समाप्त करके दुनिया में शांति की स्थापना करता है।

राजनीति के स्तर पर देखा जाये तो गांधीजी के धर्मविहीन राजनीति के विपरीत सिद्धान्त पुनः राजनीति की स्थापना द्वारा सरकारों व नागरिकों एवं लोकतंत्र की स्थापना की

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

आ सकती है जिससे बंगलादेश की शेख हसीना सरकार जैसी अधिनायकवादी स्थिति से बचकर शांति की स्थापना करके मानवता की रक्षा की जा सकती है यह प्रेमी नेता व उनके द्वारा स्थापित शांतिपूर्ण राजनीति ही कर सकती है।

आजकल आर्थिक क्षेत्र में शीर्ष स्थान प्राप्त करने की होड़ ने भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, जालसाजी, क्रोनी कैपेटलिज्म जैसी समस्याओं को जन्म दिया है इसके लिए मानवतापूर्ण प्रेम व मानवता युक्त व्यापार द्वारा ही हम दुनिया में शांति स्थापित कर सकते है चाहे CSR की संकल्पना हो या गांधी जी के सर्वोदय व ट्रस्टीशिप अथवा बिल व मेलिंडा गेट्स के परोपकारी संस्थान। सभी का उद्देश्य प्रेम रूपी नेता द्वारा दुनिया में शांति स्थापित करना ही है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि जिस तरह कबीर का मानवता प्रेम हो या फिर अशोक की धम्म की नीति दुनिया में स्थायी शांति हेतु समानता, स्वतंत्रता, न्याय, व ईमानदारी तथा मानवता की स्थापना हेतु प्रेम के भाव व मूल्यों की स्थापना अत्यावश्यक है ~~चूंकि~~ ~~[illegible]~~ प्रेम रूपी लता ही है कि आज मदर टेरेसा की करुणा, विवेकानंद का मानवता प्रेम का दरिद्रनारायण व विनोबा समाज का उन्नति की सुरक्षा व प्रेम की भावनाएं जिन्होने 'सर्वजन सुखाय' तथा 'सर्वजन हिताय' [illegible] की अवधारणा को महत्व देकर दुनियां में शांति स्थापित करने ~~की~~ के लिए प्रयास किये। ~~अतः~~

अतः वर्तमान समस्याओं आतंकवाद, युद्ध, पर्यावरण संरक्षण, शरणार्थी संकट,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

~~शीघ्र~~ ऊर्जा संकट, मानवीय मूल्यों की स्थापना तथा लैंगिक, साम्प्रदायिक व नृजातीय विभेद की समाप्ति हेतु प्रेम रूपी सत्ता का सत्ता प्रेम की भावना पर विजय पाना जरूरी है। तभी सारा दुनिया में स्थायी शांति व 'सर्वे भवन्तु सुखिन्ह' का आदर्श प्राप्त किया जा सकेगा। अन्त निम्न पंक्तियाँ उल्लेख है -

"कौन कहता है कि आसमान में सुराग नहीं हो सकता
एक पत्थर तो ज़रा तबीयत से उछालो यारो।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-2

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

⑩ (जब प्रेम रूपी सत्ता), जनता के प्रति प्रेम पर विजय प्राप्त करलेगी तो दुनिया में शांति का अनुभव होगा।

दृष्टि The Vision d

SPACE FOR ROUGH WORK

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'पोथी-पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।'

प्रेम रूपी सत्ता क्या होती

सत्ता के प्रति प्रेम क्या है?

सत्ता के प्रति प्रेम की ~~[illegible]~~ के क्या कारण है? (शांति के लिए)
- बुद्ध - नाम मात्र (सत्ता) प्रतीक (बुद्ध)
- स्वार्थ, -
- अधिनायक - हिटलर, अशोक, मुसोलिनी

(सत्ता के स्तर) — व्यक्तिगत स्तर पर
- परिवार - महिला अधिकार, पितृसत्तात्मक
- समाज - ~~[illegible]~~ जातिवाद, हानर किलिंग, मानवीय मर्यादा
- देश - युद्ध, संसाधन अभाव
- वैश्विक - पर्यावरण, परमाणु संहार

(शांति की अनुभव कैसे)

जगत विनाश

राम राज्य - 'दैहिक दैविक भौतिक तापा राम राज्य काहु नहीं व्यापा'

कल्याणकारी - सर्वजन हिताय, सर्व जन सुखाय।

गरीबी,
अन्याय
असमानता
अल्पसंख्यक
पर्यावरण प्रदूषण,
ऊर्जा संरक्षण
वैश्विक - मांग - वन अर्थ वन परिवार one future
वसुधैव कुटुम्बकम्

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

सिद्धांतवाद के साथ प्रतिबद्धता को जोड़ने की समझ लोकतंत्र के लिए आवश्यक है

क्यों? कैसे? क्यों आवश्यक?

कैसे स्थापित करना

SPACE FOR ROUGH WORK

- चुनाव | मूल अधिकार
- अभिव्यक्ति की आजादी (19(1))
- भ्रष्टाचार के प्रति - ईमानदार
- गांधी जी की धर्म व सिद्धांत विहीन राजनीति
- मीडिया — 3rd
- शांति स्थापना

कल्याणकारी
जवाबदेह
भागीदारी

अधिनायकतंत्र - हिटलर, मुसोलिनी, किम जोंग
लोकतंत्र

अच्छा लोकतंत्र — न्यायपालिका, समानता, भागीदारी, पंथनिरपेक्ष न्याय, न्याय, स्वतंत्रता, समानता, संस्थागत संरचना, प्रतिरोधकता

"राजु राज प्रिय प्रजा दुःखारी सो नृप अवस नरक अधिकारी"

"निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय, बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय"

स्थानीय पंचायत, ULB
राज्य स्तर
केंद्र सरकार

(1) संप्रदायवाद क्या है?

(2) प्रतिबद्धता क्या होती (3) लोकतंत्र क्या होता है? पश्चिमी

वैदिक गणतंत्र (प्राचीन)
UNSC सुधार

लोकतंत्र के लिए संप्रदायवाद व प्रतिबद्धता क्यों जरूरी है।

प्रतिबद्धता व संप्रदायवाद नहीं होगा तो लोकतंत्र में क्या होगा?

क्या हमेशा संप्रदाय व प्रतिबद्धता लोकतंत्र को मजबूत बनाते हैं?

प्रतिबद्धता व सिद्धांतवाद को कैसे जोड़ सकते व लोकतंत्र को इनसे क्या लाभ है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation